MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सह–संपादक

प्रा. प्रमोद किशनराव घन

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

अतिथि संपादक

डॉ. रमेश संभाजी कुरे

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

39) हिंदी काव्य में कृषक चेतना
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, जि. नांदेड ||147

40) उपेक्षित किसान : कृषिप्रधान राष्ट्र
डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव, जि. लातूर (महाराष्ट्र) ||150

41) किसान का आदर्श मानविय रूप – सुजान भगत के संदर्भ में
डॉ. संगीता लोमटे, परभणी ||153

42) नागार्जुन की कविता में किसान वर्ग
प्रा.डॉ. वसंत पी. गाडे, जि. हिंगोली ||155

43) जगदीशचंद्र के उपन्यासों में कृषक जीवन
प्रा.डॉ. माधव पाटील, परभणी ||157

44) 'ढ़ाई बीघा जमीन' में कृषक चेतना
डॉ. रेविता बलभीम कावळे, बसमतनगर ||160

45) भारतीय किसान की वर्तमान दशा और दिशा
डॉ. पंडित बन्ने, जि–सोलापुर (महाराष्ट्र) ||163

46) प्रेमचंद जी के उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा.डॉ. गिरि डि. व्ही., जि.जालना ||165

47) प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान चेतना
प्रा.डॉ. देशपांडे व्ही. व्ही., परभणी ||168

48) वंजारा समाज के कृषक लोकगीतों का विवेचन
डॉ. व्ही. पी. चव्हाण, जि. नांदेड ||171

49) फाँस:किसान की करूण गाथा
डॉ. संजय धोटे, वर्धा ||173

50) कृषक जीवन–संघर्ष की सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति– गंगामैया
डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते, चापोली ||178

51) प्रेमचंद के गोदान उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ, जि. परभणी ||181

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

ही कर सकता। इसलिए नागार्जुन की
को किसानों एवं श्रमिक वर्ग की
ती है। इसपर विश्वभर प्रसाद तिवारी
र्जुन की कविताकी शक्ति भारतीय
को पूर्ण सहानूभुति के साथ चित्रित
क कुंठहिन कवि है। समाज जीवन के
के चक में पिसती हुई भारतीय जनता
ादी अंधविश्वासी, धुमिल बदबुदार
और व्यवस्था के जनविरोधी चरित्र
—कपट, भ्रष्टाचार और पाखण्ड का
ा की कविता में है वैसा चित्र शायद
मिले। उनकी कविता मुख्य रुप से
क्ति और खुराक ग्रहण करती है।..
विता में दल के साथि तो नहीं मगर
र बंधे रहे है।[९]

ाकर हम कह सकते है कि नागार्जुन
न का विषय नही है। उनकी काव्य
र्गजीवन को पीड़ाओं से पाठकों को
हा है। काव्य में अभिव्यक्त आक्रोश
ने एक कुंआर भरने का कार्य किया
क व्यवस्था के कारण शोषक वर्ग के
ले आ रहे संघर्ष तथा शोषण को बड़े
चित्रित करते है। साथ ही अपने
, की समस्या, मजदूरो का होता
व्यथा, पीड़ा, करुणा को सरलता
। इसलिए केदारनाथ अग्रवाल और
ता को कालजयी बनाती है।

ावली, तुलसीदास,पृ. ११६
प्रतिनिधिक कविताएँ, केदारनाथ
पृ. ३०
ा स्तवन, प्रतिनिधिक कविताएँ,
अग्रवाल, पृ. ३०
स्तवन, प्रतिनिधि कविताएँ, केदारनाथ
. ९६—९७
ारी हिंदी कविता में जनवादी चेतना,
पृ. १५६
ा, नागार्जुन, पृ. १३—१४
ना की सामाजिकता, मैनेजर पांडेय,
-१८६
ा, नागार्जुन, पृ. ९३
लिन हिंदी कविता, विश्वनाथप्रसाद
. ४९

39

हिंदी काव्य में कृषक चेतना

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, ता.हिमायतनगर, जि. नांदेड

हमारे भारतीय समाज में कृषक वर्ग का विशेष महत्त्व है। हमारी भारतीय संस्कृति पूर्णरूप से कृषक पर आधारीत है। हमारी संस्कृति में कृषक वर्ग का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय नीति, विविध संस्कार व सामाजिक चेतना मुख्यत: कृषि समाज की ही है। भारत की ७५ टक्के जनता कृषि पर आधारित व्यवसायों पर ही निर्भर है। साहित्यकार सामाजिक यथार्थ के प्रत्येक पहलू को अपनी रचनाओं में उजागर करता है, इसलिए भारतीय कृषक वर्ग किसी —न— किसी रूप में साहित्य में प्रविष्ट होता रहा है। यद्यपि आधुनिक काल से पहले साहित्य में सर्वहारा वर्ग के सुख—दु:ख, आशा—निराशा और जीवन संघर्ष को प्रमुखता से अभिव्यक्ति नही मिलती थी, लेकिन, खेती, किसान, भिखारी, भीख के वर्णन, अकाल के वर्णन, सामाजिक दुर्दशा के चित्र तथा प्रेम—कथाओं में प्रसंगवश कहीं न कहीं किसान जीवन की ओर संकेत विविध साहित्यिक रचनाओं में अवश्य दिए है । हिन्दी के आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि १८५७ का किसान—विद्रोह ही है, जिसमें किसानों ने खूब—बढकर—चढकर भाग लिया था। इसका शहर साहित्यिक प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। आधुनिक काल में मशीन व औद्योगिक समाज में तबिदली के साथ समाज में नए वर्णो का उदय भी हुआ और वग—संतुलन भी बदला हैं, प्राथमिकताएँ भी बदली नजर आ रही है। समाज के गरीब—मजदूर वर्ग व मेहनतकश वर्गो के सुख दु:ख व जीवन —संघर्ष ने आधुनिक साहित्य में केंद्रिय स्थान

ग्रहण किया है। कविता मनुष्य की भावनाओं का सहजोद्रेक है। मनुष्य का सम्पूर्ण व्यवहार, आचरण, मनुष्य का समाज, विविध सामाजिक वर्ग इसके प्रमुख विवेच्य विषय रहे है।

सुमित्रानंदन पंत ने अपनी कविता 'कृषक' में किसान को युग–युग का भार वाहक, वज्रमूढ़ हठी, रूढ़ियों का रक्षक, दीर्घ सूत्री, दुराग्रही, संषक, संकीर्ण, समूह–कृपण, स्वाश्रित, शोषित, सुधार्दित, कूप–मंडूक आदि कहकर उसकी कमजोरियों पर प्रकाश डाला है। प्रगतिवादी–आंदोलन के साहित्यिक काल में किसानों –श्रमिकों को मुख्य रूप से कविता में चित्रित किया गया था। साम्राज्यवाद के खिलाफ तीव्र होते संघर्ष में किसान की मूक अभिव्यक्ति कविता में भी उपस्थित हुई है। साम्राज्यवादी व्यवस्था में अँग्रेजी राज की क्रुरता व दमनकारी नीतियों का अत्यंत सूक्षमता वव समग्रता से वर्णन करते हुए बालमुकुन्द गुप्त ने 'सर सैयद अहमद का बुढ़ापा' कविता में किसानों के शोषण का मार्मिक वर्णन किया हैं। सारे समाज का पेट भरनेवाला किसान ही भूखा है, उसके जानवरों को भी कुछ खाने के लिए नही मिलता। जब वे कहते है कि, ''जिनके बिगड़े सब जग बिगडै उनका हमको रोपा है। जिनके कारण सब सुख पावें जिनका बोया सब जन खावे, हाय हाथ उनके बालक नित भूखों के मारे चिल्लावें। हाय जो सब को गेहूँ देते वह ज्वार बाजरा खाते है, वह भी जब नही मिलता तब वश्क्षों की छाल चबाते है। सूनी दशा कुछ उनकी बाबा! जो अनाज उपजाते है, जिनके श्रम का फल खा–खाकर सभी लोग सुख पाते है।''[१]

बालमुकुन्द गुप्त ने इस कविता में किसानों की दुर्दशा का जो वर्णन किया, वह आज भी कालाहांडी के किसानों की याद दिला जाता है। गुप्तजी कविता में किसान वृक्षों की छाल चबाकर पेट भरने को विवश है, तो आज के किसान अपनी दयनीय स्थिती के कारण कच्ची गुठलियाँ खाकर बीमार होने को विवष है। साम्राज्यवादी –पूँजीवादी शोषण के कारण एक लाख से भी अधिक किसान आत्महत्या कर चुके है। यह कोई प्राकृतिक विपदा के कारण नही है, बल्कि पूँजीपरस्त विघातक सरकारी नितियों व योजनाओं के कारण है। रामधारीसिंह दिनकर ने साम्राज्यवादी शोषण को भारतीय जनकी दुर्दशा का मुख्य कारण माना है। उन्होंने शोषण के खिलाफ उठ खडे होने के लिए जनमानस को प्रेरित किया। दिनकरजी द्वारा रचित 'हाहाकार' कविता के प्रति विजेंद्र नारायणसिंह कहते है– ''हाहाकार कविता भारतीय किसानों की बेमिसाल गरीबी का शोकगीत है।''[२]

आज किसान का जीवन अभावग्रस्तता और बदहाली से परिपूर्ण हैं। उनके जीवन में असन और वसन दोनों का प्रभाव स्पष्टत: नजर आता है। इसी को किसी साहित्यकार की लेखनी क्या खूब स्पष्ट किया है :–

''जेठ वो कि हो पूरा, हमारे कृषकों को आराम नही है छुटे बैल के संग, कभी जीवन में ऐसा याम नही हैं। मुख में जीभ, शक्ति भुज में, जीवन में सुख का नाम नही है, वसन कहाँ ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।''[३]

रामधारीसिंह दिनकर ने अपनी लेखनी को सर्वहारा वर्ग की समस्त स्थितियों को उनके समग्र रूप में चित्रित करने का संकल्प लिया। उनके काव्य साधना की एक मार्मिकता यह भी है–

''बुँद–बुँद बेचेंगे, अपने लिए नही कुछ छोडेंगे
शिशु मचलेंगे, दुध देख, जननी उनको बहलाएँगी।
मैं फाडुँगी हृदय, लाज से आँख नहीं रो पाएगी।
सूखी रोटी खाएगा जब कृषक खेत में धरकर हल
तब दूँगी मैं तृप्ति उसे बनकर लोटे का गंगाजल।[४]

नरेंद्र शर्मा की 'लाल निशान'भी समाजवादी सत्ता में कृषक वर्ग इस प्रकार व्यक्त करती दृष्टिगत होती है–

''लाल रूस है ढाल साथियों सब मजदूर किसानों की।
वहाँ राज है पंचायत का वहाँ नही है बेकारी।
लाल रूस का दुष्मन साथी, दुश्मन सब इंसानो का।
दुश्मन है सब मजदूरों का, दुश्मन सभी किसानों का।''[५]

दिनकर, बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा, नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' आदि कवियों की कविताएँ शोषित–पीडित, पददलित कृषक वर्ग के प्रति करूणा व सहानुभूतिपरक भाववभिव्यक्ति

विजय उल्लास भी परिलक्षित हुआ है। इन कविताओं में वह निरीह किसान खेती करता नजर आता है। प्रेमी हृदय प्रकृति से प्रेम करता नजर आता है। वह अपने परिवार के लिए खटता नजर आता है। कविता में किसान जीते–जागते हाड–मांस का एक खोकला, जीर्ण–शीर्ण व्यक्ति भी है। वह केवल एक धारणा मात्र बनकर रह गया है। इन कविताओं में किसान के विभिन्न स्तर है। कभी वह धनी किसान भी है, तो कभी मध्यमवर्गीय और खेतीहर मजदूर के रूप में भी दिखाई देता है।

इस प्रकार हिंदी कविता में किसानों के विविध रंगी जीवन के रंग अपने समग्र रूप में अपनी संपूर्ण गरिमा के साथ चित्रित नजर आते है। उनमें किसानी जीवन की त्राहि–त्राहि का स्वर तो किसानों की दम तोड़ती मूक तड़प भी दिखाई देती है।

संदर्भ :–

१) सुमित्रानंदन पंत –कृषक
२) बालमुकुंद गुप्त – सर सैयद अहमद का बुढ़ापा
३) विजेंद्र नारायणसिंह – दिनकर की कविता – 'हाहाकार'
४) नरेंद्र शर्मा– लाल निशान
५) नागार्जून –'दूर – दूर से आए मनवाने निज अधिकार'
६) नागार्जून 'अकाल और उसके बाद'
७) बसंत त्रिपाठी – किसानों की आत्महत्या
८) मिथिलेश श्रीवास्तव – बित्ता भर
९) एकांत श्रीवास्तव – 'जमीन–२'

❑❑❑